# जे०पी०एस० महाविद्यालय

(सम्बद्ध- लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

प्रेमा नगर, नहर कोठी, इचौली, रायबरेली-229301

सम्पर्क सूत्र- +91 8604882831, +91 9936129021, +91 8853912202 | ई.मेल-jpsmahavidyalaya@gmail.com

वेब-www.jpsmahavidyalaya.org.in

स्थापना वर्ष : 2018-19

# जे.पी.एस. महाविद्यालय

(सम्बद्धः लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

महाविद्यालय कोड : 4078

जे.पी.एस. फाउण्डेशन ट्रस्ट, लखनऊ
द्वारा संचालित

पता - प्रेमा नगर, नहर कोठी, इचौली, रायबरेली-229301

"An investment in *knowledge* always pays the best interest"

## प्रवेश हेतु सूचना विवरणिका एवं आवेदन-पत्र

# ''उठो, जागो, और लक्ष्य का वरण करो''

## स्वामी विवेकानन्द

युवा हृदय सम्राट स्वामी विवेकानन्द मानवीय गरिमा की स्थापना के प्रतिबद्ध अप्रतिम मनीषी थे। उन्होंने 19 व 20वीं शताब्दी में बढ़ते भारतीय राष्ट्रवाद में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने धर्म के विभिन्न पहलुओं को फिर से परिभाषित एवं समन्वित किया। स्वामी जी ने शिक्षा, विश्वास और चरित्र निर्माण के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए एक नूतन समाज की आधारशिला रखी।

विवेकानन्द जी के अनुसार किसी देश का भविष्य उसके नागरिकों पर निर्भर करता है। जीवन निर्माण एवं चरित्र निर्माण उनके जीवन का ध्येय था। उन्होंने ''मानव जाति को अपनी दिव्यता का प्रचार व प्रसार करने और इसे जीवन के हर आन्दोलन में प्रकट करने का मार्ग प्रस्तुत किया।

## शिक्षा

स्वामी जी का मानना था कि शिक्षा मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उन्होंने यह अफसोस जताया कि शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था में किसी व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने और उसके आत्मविश्वास व आत्मसम्मान को जागृत करने का सामर्थ्य नहीं है। विवेकानन्द के लिए शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं अपितु उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित थी।

उन्होंने शिक्षा के माध्यम से जीवन के चरम-परम लक्ष्य को प्राप्त करने का दृष्टिकोण विकसित किया तथा मनुष्य में मानवीय गरिमा और अपनी अस्मिता को अक्षुण्य बनाये रखने का साहस एवं भाव जागृत किया। स्वामी जी ने सब प्रकार की दुर्बलताओं को पाप मानते हुए यह बोध कराने की कोशिश की कि मनुष्य तरस के काबिल पापी नहीं अपितु दिव्य सत्ता का अंश है। वे हमेशा इस बात को जोर देकर कहा करते थे "If there is sin in this word it is weekness, avoid all weekness, weekness is sin, weekness is death". स्वामी जी के अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान व कौशल का पर्याय नहीं अपितु मूल्यों को आत्मसात करने की प्रक्रिया है। यह अन्तर्निहित शक्तियों के प्रशिक्षण की प्रक्रिया एवं चिरन्तन शक्ति की खोज की शक्ति भी है।

स्वामी विवेकानन्द ने महसूस किया कि सम्प्रति देश में जो शिक्षा बालकों को दी जा रही है, वह नकारात्मक है। यह शिक्षा उनमें आत्मविश्वास व आत्मसम्मान तथा सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में असमर्थ है जो जीवन के लिए अपरिहार्य है। शिक्षा में सुधारात्मक एवं परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित करने की शक्ति होनी चाहिए। वे युवा शक्ति को इस योग्य बनाना चाहते थे कि लोगों में सौमनस्य, सामन्जस्य एवं एक्य का भाव पैदा कर पारस्परिक प्रेम पर आधारित समतामूलक समाज की स्थापना कर सकें।

# प्रेरणा-स्त्रोत

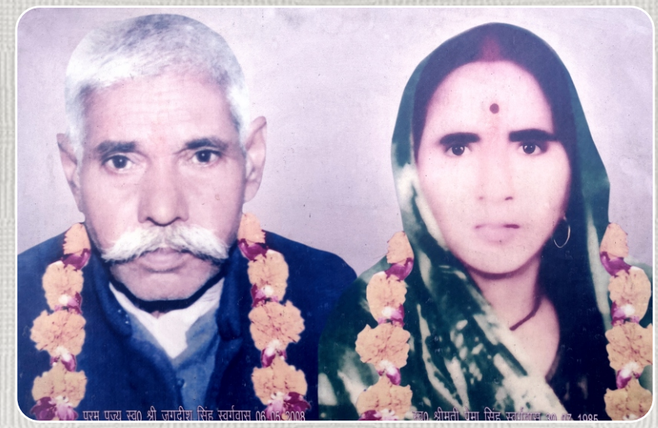

**परम पूज्यनीय स्मृतिशेष पिता-माता जगदीश प्रेमादेवी सिंह (जे.पी.एस.) को समर्पित जिनके आशीर्वाद एवं सहयोग से ही सामाजिक कर्तव्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति सम्भव हो सकी, तथा सभी सहयोगियों को साधुवाद जिन्होंने सामाजिक विकास यात्रा में समर्पण भाव से सराहनीय योगदान प्रदान किया है।**

**-के.बी. सिंह**

# संक्षिप्त परिचय

जे०पी०एस० महाविद्यालय, लखनऊ-इलाहाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित बछरावाँ कस्बे से बछरावाँ-मौरावाँ-उन्नाव राजमार्ग में 08 किमी० पर प्रेमानगर, नहर कोठी, इचौली पर स्थित है। धर्म और जाति की संकीर्ण विचारधारा से इतर परस्पर सहयोग व सौहार्द की भावना पर आधारित हमारा यह महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के दूषित प्रभावों से मुक्त, स्वस्थ एवं सात्विक परिवेश में अवस्थित ग्रामीण अंचल का शिक्षा निकेतन है। छात्र/छात्राओं को सुसंस्कृत, प्रतिभा सम्पन्न एवं उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना महाविद्यालय परिवार का मूल मन्त्र है।

शैक्षिक सत्र 2018-19 में जे०पी०एस० फाउण्डेशन ट्रस्ट, लखनऊ के द्वारा जे०पी०एस० महाविद्यालय की स्थापना के मूलाधार क्षेत्र सम्मानित एवं प्रबुद्ध नागरिक श्री के०बी० सिंह जी ने अपने उत्सर्गशील सहयोगी श्री शीतलाबक्श सिंह-एडवोकेट, डॉ. महेन्द्र कुमार अवस्थी, उ०प्र० सरकार द्वारा साहित्य भूषण से सम्मानित श्री सी०के० सिंह एवं जे०पी०एस० फाउण्डेशन लखनऊ व विवेकानन्द इण्टर कालेज के सक्रिय कर्मयोगियों की सहभागिता एवं सहायता के बल पर जनपद-रायबरेली व उन्नाव के अति पिछड़े ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा की लालसा को दृष्टिगत करते हुए कला, वाणिज्य एवं विज्ञान पाठ्यक्रम की उच्चस्तरीय शिक्षा का केन्द्र बनाने का दृढ़ निश्चय किया। श्री के०बी० सिंह जी के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही मात्र 04 माह में विद्यालय का निर्माण करने की कठिन परिस्थितियों में भी इस महाविद्यालय की परिकल्पना साकार हो सकी। महाविद्यालय को स्थापना वर्ष 2019-20 में ही उ०प्र० के उत्कृष्ट छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (वर्तमान सत्र 2021-22 में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से सम्बद्ध) स्नातक स्तर पर कला संकाय (बी०ए०) के अन्तर्गत अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, अंग्रेजी, हिन्दी, गृह विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र विषयों व विज्ञान संकाय (बी०एस०सी०) के अन्तर्गत भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित विषयों तथा वाणिज्य संकाय के अन्तर्गत (बी०काम०) पाठ्यक्रमों के संचालन की अनुमति प्राप्त करते हुए अगस्त-2019 से कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ किया गया है।

# प्रबन्धकीय संदेश

**TWO EYES MILLION DREAMS...**

प्रिय छात्र-छात्राओं/अभिभावकों,

जे०पी०एस० फाउण्डेशन ट्रस्ट, लखनऊ एक स्वैच्छिक पंजीकृत समाजसेवी न्यास है जिसकी स्थापना अगस्त 2016 में ग्रामीण क्षेत्र के गरीब, असहाय व बेसहारा लोगों के चिन्तक अविस्मरणीय स्मृतिशेष पिता जगदीश सिंह माता प्रेमादेवी सिंह जी की सामाजिक सरोकारी कार्यों एवं उदारवादी भावनाओं को ध्यान में रखकर की गयी है, ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन नंबर 564/2016 है जो कि दिनाँक 01-09-2016 को पंजीकृत है। जे०पी०एस० फाउण्डेशन ट्रस्ट अपने न्यास विलेखानुसार ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर शिक्षित बेरोजगार युवक/युवतियों, कृषकों, बाल महिला एवं उपेक्षित जन समुदाय के सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक विकास के लिए केन्द्र/राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों एवं अन्य सहयोगी एजेन्सियों के सहयोग से प्राथमिक-उच्च शिक्षा, सामुदायिक स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं प्रदूषण, नशा उन्मूलन, महिला रोजगारपरक प्रशिक्षण, महिला सशक्तीकरण, युवाओं का कौशल विकास, वृद्धजन आवास, अनाथालय, पेयजल एवं स्वच्छता आदि कार्यक्रमों का संचालन करने हेतु कृत संकल्पित है।

इन्हीं उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति हेतु ग्रामीणांचल में उच्च शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने के लिए ट्रस्ट द्वारा अपने पैतृक निवास के सुहृदयी वरिष्ठजनों की प्रेरणाओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्राओं की उच्च स्तरीय शिक्षा की उत्कंठाओं को साकार रूप प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय की स्थापना करना हमारा परम लक्ष्य था, जिसको आज जे०पी०एस० महाविद्यालय के रूप में मूर्तरूप दिया गया। इस पुनीत कार्य से शिक्षा के उच्चतम आयामों को छूने की महत्वाकांक्षा हेतु आप सभी वरिष्ठजनों, समाजसेवियों, अभिभावकों, छात्र/छात्राओं को हृदय की गहराइयों से धन्यवाद ज्ञापित कर इतिश्री न करके भविष्य के होनहार, नवोदित, सुसभ्य नागरिकों के जीवन को संवारने की अभिलाषा है।

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से सम्बद्ध स्नातक स्तरीय कला, विज्ञान, वाणिज्य संकाय के अनुमोदित पाठ्यक्रम को महाविद्यालय के सभी प्रवेशार्थी छात्र/छात्राओं को योग्य विषय विशेषज्ञों के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था की गयी है। आशा करता हूँ कि आपके द्वारा विषय को सरलता से समझने एवं विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की सहायता से अपना शैक्षिक विकास कर भविष्य निर्माण में यह महाविद्यालय एक मील का पत्थर सिद्ध होगा। आप सभी जीवन में सदैव विकास पथ पर अग्रसर रहें, यही कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित!
पुनः आप सभी से प्राप्त सहयोग, प्रेरणाओं,
विचारों से ओत-प्रोत, कृत-संकल्पित आपका...

**के०बी० सिंह**
मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रबन्धक

# महाविद्यालय
# में आयोजित गतिविधियाँ

**मन में एक तरंग बने, कुछ करने की उमंग बने।**
**जाय अशिक्षा भारत से, शिक्षा जीवन का अंग बने।।**

महाविद्यालय उन्नयन की हार्दिक शुभकामनाएं...।

# प्राचार्य की कलम से...

प्रिय अभिभावकों/प्रवेशार्थियों,

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में ''मैं उस ईश्वर का उपासक हूँ मूर्ख लोग जिसे मनुष्य कहते हैं'' मानवीय गरिमा की स्थापना की उनकी ललक 'दरिद्र नारायण' के भाव को प्रतिष्ठित करती है। इसीलिए वंचितों को पहले शिक्षा का अधिकार दिलाने का उन्होंने स्तुत्य प्रयास किया। इसी से प्रेरित होकर इस क्षेत्र में संस्थापक श्री के०बी० सिंह द्वारा पहले विवेकानन्द इण्टर कालेज और फिर जे०पी०एस० महाविद्यालय को स्थापित करने का सफल प्रयास किया गया। इस स्वप्न व संकल्प को साकार करने में जिन्होंने अपना उदार सहयोग प्रदान किया, महाविद्यालय परिवार उनके प्रति कृतज्ञ है। स्वामी जी भारत में भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा प्रणाली को लागू करना चाहते थे, जिससे भारतीयों में आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता की भावना को विकसित किया जा सके। शिक्षा के माध्यम से ही सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति एवं परिवेश को परिवर्तित किया जा सकता है। अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूकता पैदा करने, व्यक्तित्व के सम्यक विकास एवं जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने तथा अन्धविश्वासों व अवांछित परम्पराओं को दूर करने एवं रोजगारोन्मुख आर्थिक ढांचा विकसित करने और वर्तमान एवं भावी गम्भीर चुनौतियों का सामना करने में सक्षम युवा शक्ति का जीवन निर्माण ही इस महाविद्यालय की स्थापना का परम लक्ष्य है।

उच्च शिक्षा के माध्यम से युवा शक्ति के उत्तम चरित्र निर्माण, मन की शक्ति बढ़ाने हेतु प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण का निर्माण करते हुए बुद्धि का विस्तार कर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने में सामर्थ्यवान बनाने हेतु महाविद्यालय परिवार कृत संकल्पित है।

मैं इस संस्थान की ओर से इण्टरमीडिएट परीक्षा में उत्तीर्ण सभी छात्र/छात्राओं को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें महाविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए आमंत्रित करता हूँ। मैं आपको एक आदर्श शैक्षिक वातावरण प्रदान करने का आश्वासन देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित!

| डा० निधि राज | डा० रोहन सिंह | देवराज सिंह |
|---|---|---|
| कला संकायाध्यक्ष | सह-आचार्य | कार्य. प्राचार्य |

## संकल्पना...

जे.पी.एस. फाउण्डेशन ट्रस्ट, लखनऊ के द्वारा जे.पी.एस. महाविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य मुख्य रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्र में ज्ञान की ऐसी ज्योति जलाना है, जिससे समाज का वह वर्ग जो संसाधनों के अभाव में ज्ञान के प्रकाश से वंचित रह जाता है वो प्रकाशित होकर समष्टिगत सर्वांगीण विकास कर सके।

हम सभी का दृढ़ संकल्प है कि शैक्षिक क्रियाकलापों के साथ स्वस्थ सामाजिक मापदण्डों के अनुरूप महाविद्यालय सदैव अग्रसर रहेगा।

| संजय सिंह | बसन्त लाल | अमित सिंह | दिलीप सिंह |
|---|---|---|---|
| सदस्य | कार्यालय अधीक्षक | निदेशक | उप-प्रबन्धक |

## -: प्रवेश सम्बन्धी नियम :-

1. प्रवेशार्थी का प्रवेश प्राचार्य द्वारा गठित प्रवेश समिति की संस्तुति पर ही किया जायेगा।
2. प्रवेश पूर्णतया मेरिट (वरीयता सूची) के आधार पर किया जायेगा।
3. प्रवेश हेतु छात्र/छात्रा को प्रवेश समिति के समक्ष व्यक्तिगत रूप से उपस्थिति होना अनिवार्य है।
4. प्रवेश साक्षात्कार के समय अभ्यर्थी को अपने समस्त प्रमाण–पत्रों/अंकतालिकाओं की मूल प्रति लेकर उपस्थित होना अनिवार्य होगा।
5. छात्र/छात्रा को किसी एक विषय हेतु प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
6. प्रवेश संस्तुति हो जाने पर निर्धारित तिथि तक प्रवेश शुल्क जमा करना होगा अन्यथा प्रवेश निरस्त माना जायेगा।
7. अनुचित साधन के प्रयोग (U.F.M.) का दोषी अभ्यर्थी प्रवेश का पात्र नहीं होगा।
8. ऐसे अभ्यर्थी जो किसी आपराधिक मामले में सजा पा चुकें हैं अथवा उन पर अभियोग चल रहा हो या जिनका आचरण संदिग्ध हो तो उन्हें प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
9. प्रवेश सम्बन्धी कोई भी सूचना असत्य पाये जाने पर प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा।
10. महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों से सम्बन्धित सूचनाएं नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित होगी।
11. किसी भी अभ्यर्थी को प्रवेश देने या न देने का अधिकार प्रवेश समिति के अध्यक्ष के पास सुरक्षित होगा, एवं प्रवेश समिति द्वारा आवंटित विषय ही मान्य होगा।
12. वरीयता सूची (मेरिट लिस्ट) के निर्माण एवं प्रवेश के सन्दर्भ में प्रवेश समिति का निर्णय अन्तिम रूप से मान्य होगा।
13. बी0ए0 प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु इण्टरमीडिएट में कम से कम 40 प्रतिशत अंक अनिवार्य होगें।
14. स्नातक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।

## -: प्रवेश प्रक्रिया :-

प्रवेशार्थी आवेदन पत्र पर निर्धारित शुल्क 100 रू0 कार्यालय काउन्टर पर जमा करके प्रवेश आवेदन प्राप्त कर सकते हैं। समस्त अभ्यर्थी आवेदन पत्र भरने से पूर्व विवरणिका का भली–भाँति अध्ययन कर तद्नुरूप आवेदन पत्र को भरें।

महाविद्यालय में छात्र/छात्राओं को प्रवेश उनकी अर्जित योग्यता/उत्तर प्रदेश शासन तथा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित मानक के अनुरूप किया जायेगा। प्रवेश हेतु गठित प्रवेश समिति का निर्णय अन्तिम रूप से मान्य होगा। छात्र/छात्राएं विषयों का चयन स्वयं की क्षमता एवं उपलब्ध सीट संख्या के अनुरूप करें, पूर्ण रूप से भरे हुए एवं वांक्षित प्रमाण पत्र संलग्न किये हुए आवेदन पत्र ही स्वीकार किये जायेगें, अपूर्ण आवेदन पत्र स्वीकार नहीं कियें जायेगें।

## -: उपस्थिति :-

छात्र/छात्रायें नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रह कर अपना अध्ययन कार्य करेगें। विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति रहने पर परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं मिलेगी तथा कुल अध्यापन कार्य दिवस कम से कम 180 दिन होगें। उपस्थिति कम होने की दशा में विश्वविद्यालय नियमानुसार परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

## -: प्रयोगशाला :-

छात्र/छात्राओं हेतु समस्त उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला की सुविधा उपलब्ध है।

## -: पुस्तकालय :-

जे.पी.एस. महाविद्यालय में पुस्तकालय एवं वाचनालय की समुचित व्यवस्था है। इसमें विविध विषयों की पर्याप्त संख्या में पुस्तकें उपलब्ध है। अंग्रेजी तथा हिन्दी के सभी प्रमुख समाचार पत्र, पत्रिकायें, वाचनालय में आती है। पुस्तकालय के अध्ययन कक्ष में छात्रों के लिए अध्ययन की व्यवस्था है।

## -: पुस्तकालय के नियम :-

1. छात्रों को परिचय–पत्र एवं प्रवेश की रसीद दिखाने पर ही पुस्तकालय कार्ड बन सकेगा।
2. छात्रों के पुस्तकालय कार्ड पर एक बार में दो से अधिक पुस्तकें नहीं दी जायेगी।
3. पुस्तक केवल 21 दिन की अवधि के लिए ही दी जायेगी इससे अधिक समय तक रखने पर 01 रूपया प्रतिदिन की दर से आर्थिक दण्ड लिया जायेगा। अवकाश की स्थिति में कालेज खुलने के प्रथम दिन तक पुस्तक न जमा कर सकने की स्थिति में विद्यार्थी को अवकाश के समय का भी विलम्ब शुल्क देना होगा।
4. यदि कोई छात्र किसी पुस्तक को 21 दिन की अवधि से अधिक रखना चाहता है तो उसे जमा करके दूसरे दिन प्राप्त कर सकता है। यह पुस्तक दो बार तभी दी जायेगी यदि अन्य विद्यार्थी को उसी समय उस पुस्तक की आवश्यकता न हो।
5. पत्रिकायें, समाचार पत्र अध्ययन के लिए ही उपलब्ध होगें घर ले जाने की सुविधा नहीं दी जायेगी।
6. सभी पुस्तकें परीक्षा आरम्भ होने से पहले पुस्तकालय को लौटा देनी होगी। यदि कोई छात्र पुस्तक खो देता है, तो उसे उस पुस्तक का नया मूल्य अथवा नई पुस्तक देने पर ही परीक्षा में बैठने की अनुमति मिलेगी।
7. संदर्भ ग्रन्थ छात्रों को निर्गमित नहीं किये जायेंगें। ये पुस्तकें पुस्तकालय में ही पढ़ी जायेगी।
8. पुस्तक लेते समय विद्यार्थी देख ले कि पुस्तक कहीं से फटी अथवा उसके पन्ने गायब तो नहीं हैं, अन्यथा पुस्तक जमा करते समय यदि पुस्तक कहीं से फटी है अथवा पन्नें गायब मिले, तो उसका उत्तरदायित्व छात्र का ही होगा और उसे नई पुस्तक का मूल्य जमा करना होगा।
9. परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व पुस्तकालय की पुस्तक वापस करने पर ही प्रवेश पत्र दिया जायेगा और यदि धरोहर राशि जमा करके पुस्तक प्राप्त की गई है तो परीक्षा के पश्चात् पुस्तकें लौटाने पर जमा की गई धनराशि वापस कर दी जायेगी।
10. पुस्तकालय में शान्ति बनाये रखना नितान्त आवश्यक है। दोषी छात्र दण्डित किये जायेंगें। छात्रों को पुस्तकालय से सम्बन्धित नियमों का पालन करना होगा। पुस्तक प्राप्त करने में कोई कठिनाई हो तो विद्यार्थी पुस्तकालयाध्यक्ष से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

## -: अनुशासनात्मक नियम :-

1. महाविद्यालय हम सभी की धरोहर है, जिसकी सुरक्षा, सौन्दर्यीकरण करना पुनीत कर्म है। अस्तु महाविद्यालय प्रांगण को दूषित होने और न ही किसी प्रकार की छति होने देना है।
2. यह शैक्षिक संस्थान मैत्रीपूर्ण संवेदनाओं का द्योतक है, इसलिए उत्पीड़क प्रवृत्तियों को त्यागकर समस्याओं के निराकरण हेतु धैर्यपूर्वक प्रयास करना है।
3. महाविद्यालय परिवार के सदस्य होने के नाते किसी भी प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी व शिक्षार्थी के साथ अमर्यादित भाषा–शैली/व्यवहार नहीं किया जाना है।
4. यह महाविद्यालय गुरू–शिष्य की भारतीय परम्परा का संवाहक है। इसलिए अपेक्षा करते हैं कि यहां के शिक्षार्थियों का आचरण शिष्य की मर्यादा के अनुरूप रखते हुए विनय–शीलता में रहें।
5. महाविद्यालय की प्रयोगशालाओं की सामग्री एवं उपकरणों का उपयोग सावधानी पूर्वक करें। जिनके टूटने, गायब होने की जिम्मेदारी आप सभी की होगी।

**नोटः- यदि कोई शिक्षार्थी दुर्व्यवहार या अनुशासनहीनता का दोषी पाया जायेगा तो उसके महाविद्यालय से वंचित किया जा सकता है।**

# पाठ्यक्रम

## 1. कला संकाय (बी.ए.)

- हिन्दी
- अंग्रेजी
- राजनीति विज्ञान
- समाजशास्त्र
- अर्थशास्त्र
- गृह विज्ञान
- शिक्षाशास्त्र

प्रायोगिक विषय

- गृह विज्ञान
- शिक्षाशास्त्र

## 2. विज्ञान संकाय (बी.एस.सी.)

- भौतिक विज्ञान
- रसायन विज्ञान
- जन्तु विज्ञान
- वनस्पति विज्ञान
- गणित

प्रायोगिक विषय

- भौतिक विज्ञान
- रसायन विज्ञान
- जन्तु विज्ञान
- वनस्पति विज्ञान

## 3. वाणिज्य संकाय

बी०काम० (सभी अनिवार्य विषय)

# महाविद्यालय परिवार

## शैक्षणिक कर्मचारी गण

### कला संकाय

| | | |
|---|---|---|
| 1. डा० रोहन सिंह | सह आचार्य | हिन्दी साहित्य |
| 2. डा० नीलम देवी | सह आचार्य | अंग्रेजी साहित्य |
| 3. श्री अभय कुमार सिंह | सह आचार्य | शिक्षाशास्त्र |
| 4. डा० कंचन त्रिपाठी | सह आचार्य | राजनीति विज्ञान |
| 5. डा० निधि राज | सह आचार्य | समाजशास्त्र |
| 6. कु० स्वाती यादव | सह आचार्य | गृह विज्ञान |

### विज्ञान संकाय

| | | |
|---|---|---|
| 1. श्री विशेष पाल सिंह | सह आचार्य | भौतिक विज्ञान |
| 2. कु० हर्षिता अग्निहोत्री | सह आचार्य | रसायन विज्ञान |
| 3. श्री अरूण सविता | सह आचार्य | जन्तु विज्ञान |
| 4. डा० शिव प्रसाद यादव | सह आचार्य | वनस्पति विज्ञान |
| 5. श्री हरिओम गुप्ता | सह आचार्य | गणित |

### वाणिज्य संकाय

| | | |
|---|---|---|
| 1. कु० साभ्या गुप्ता | सह आचार्य | कामर्स |
| 2. श्री उपेन्द्र त्रिपाठी | सह आचार्य | कामर्स |

## प्रशासनिक कर्मचारी गण

| | |
|---|---|
| 1. श्री विष्णुदत्त त्रिवेदी | प्रयोगशाला सहायक |
| 2. श्री राजेन्द्र कुमार यादव | प्रयोगशाला सहायक |
| 3. श्री विजयसेन | अनुचर |
| 4. श्री जंगली प्रसाद | चौकीदार |
| 5. श्री सुरेन्द्र कुमार | स्वीपर |